ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 15 अंक 15 कुल पृष्ठ-4 11 से 17 जून, 2020 दयानन्दाब्द 197 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2077 चै. शु.-03

12 जून, 14वीं पुण्यतिथि पर विशेष

आर्य राष्ट्र के प्रथम स्वप्नदृष्टा थे

स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज

– स्वामी आर्यवेश

जन्म–१३ मार्च, १९३७
जन्मस्थान–ग्राम सुण्डाना, जिला-रोहतक
माता-पिता– श्रीमती पतोरी देवी, श्री प्रभुदयाल जी

प्रारम्भिक शिक्षा : गांव के स्कूल से मिडल तक पढ़ने के बाद आप विरक्तभाव से घर छोड़कर गुरुकुल झज्जर आये। कुछ समय यहां पढ़ाई प्रारम्भ करने के पश्चात् आपने छह महीने तक गांव बेरी (झज्जर) के एक मन्दिर में आचार्य बलदेव जी के साथ पं० राजवीर शास्त्री से संस्कृत का अध्ययन किया। आचार्य बलदेव जी भी तभी घर छोड़कर आये थे। बाद में उत्तर प्रदेश के नौनेर, सिरसागंज आदि गुरुकुलों में अध्ययन किया तथा संस्कृत महाविद्यालय यमुनानगर में स्वामी आत्मानन्द जी के सान्निध्य में शेष पढ़ाई पूरी की। व्याकरणाचार्य, आयुर्वेदाचार्य एवं दर्शनाचार्य स्तर की पढ़ाई पूरी की। तत्पश्चात आपने स्वामी ओमानन्द जी महाराज (पूर्व आचार्य भगवानदेव) के सान्निध्य में गुरुकुल झज्जर के प्रधानाचार्य का कार्यभार सम्भाला। स्वामी ओमानन्द जी के अति प्रिय शिष्यों में आप भी एक थे इसीलिये आपको उन्होंने गुरुकुल का पूरा कार्यभार सम्भलवा दिया था। अष्टाध्यायी, महाभाष्य, दर्शन आदि के आप मर्मज्ञ थे। व्यायाम में आपकी विशेष रुचि थी। उस समय आपका नाम ब्र० इन्द्रदेव मेधार्थी था।

सामाजिक जीवन की शुरुआत :–

सन् १९६६ में स्वामी अग्निवेश (पूर्व नाम प्रो० श्यामराव) कलकत्ता से गुरुकुल झज्जर आकर स्वामी इन्द्रवेश (पूर्व नाम ब्र० इन्द्रदेव मेधार्थी) से मिले तथा दोनों ने सामाजिक जीवन में उतरने का निर्णय किया। उनका यह आत्मीय सम्बन्ध अंतिम क्षणों तक अटूट रहा। दोनों ही नेताओं ने एक दूसरे का पूरक बनकर अपने सामाजिक दायित्व को निभाया। १९६७ में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के नाम से युवकों का संगठन बनाकर कार्य प्रारम्भ किया। उनके साथ उसी समय स्वामी आदित्यवेश (पूर्व नाम आचार्य रामानन्द), स्वामी शक्तिवेश (पूर्व नाम डा० कृष्णदत्त), ब्र० कर्मपाल जी, प्रो० उमेदसिंह, प्रो० बलजीतसिंह आर्य, मा० धर्मपाल आर्य, ओमप्रकाश पत्रकार, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी योगानन्द, मनुदेव आर्य, राजसिंह आर्य आदि अनेक युवक कार्यक्षेत्र में उतरे तथा आर्यजगत् में युवक क्रान्ति अभियान के नाम से एक नया अध्याय शुरू हो गया। १९६८ में अपने युवक अभियान के शंखनाद के रूप में **राजधर्म** नाम से पाक्षिक पत्र भी उसी समय प्रारम्भ कर दिया गया जो अभी तक निरन्तर निकल रहा है। युवकों को संगठित करने एवं जनसामान्य तक अपनी बात पहुँचाने के लिए १९६७ में गुरुकुल झज्जर को छोड़ दिया तथा कुरुक्षेत्र से दिल्ली तक की पदयात्रा का ऐतिहासिक आयोजन किया। यह यात्रा सैकड़ों गांवों, कस्बों व नगरों से होती हुई पन्द्रह दिन बाद दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले के समक्ष जलती मशाल हाथों में लेकर आर्य राष्ट्र की स्थापना के संकल्प के साथ सम्पन्न हुई। सन् १९६९ में हरयाणा की जनता द्वारा छेड़े गये चण्डीगढ़ आन्दोलन में युवावर्ग का नेतृत्व करते हुये स्वामी इन्द्रवेश व उनके साथी जेल गये। रोहतक सेन्ट्रल जेल में ही उन्होंने अपने अभिन्न साथी स्वामी अग्निवेश के साथ संन्यास लेने का संकल्प लिया।

७ अप्रैल १९७० को दयानन्द मठ रोहतक में स्वामी इद्रवेश जी ने स्वामी अग्निवेश एवं स्वामी सत्यपति के साथ वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् स्वामी ब्रह्ममुनि जी से संन्यास की दीक्षा ली। उसी दिन स्वामीद्वय ने आर्य राष्ट्र के निर्माण का संकल्प लेते हुए **आर्यसभा** नाम से राजनीतिक पार्टी की भी स्थापना कर ली तथा सक्रिय राजनीति में उतर गये।

१९७२ में विधानसभा के चुनावों में आर्यसभा के दो विधायक चुने गये तथा आर्यसभा हरयाणा की सर्वाधिक वोट प्राप्त करने वाली विपक्षी पार्टी बन गई।

सन् १९७३ में किसान संघर्ष समिति का गठन करके गेहूँ के भाव को लेकर जबरदस्त आन्दोलन शुरू किया।

गेहूँ का भाव बढ़वाने के लिये दिल्ली के वोट क्लब पर संसद के समक्ष आमरण अनशन किया तथा गेहूँ का भाव ७६ रुपये से १०५ रुपये करवाने में सफलता प्राप्त की।

सन् १९७४ में आर्यसमाज की सर्वाधिक सशक्त सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जिसमें दिल्ली, हरयाणा, पंजाब की आर्यसमाजें, शिक्षण संस्थायें व गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, कन्या गुरुकुल देहरादून, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी आदि सम्मिलित थी, के चुनाव में प्रधान चुने गये तथा गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति बने। यह चुनाव हाईकोर्ट की देखरेख में सम्पन्न हुआ था।

सन् १९७५ में लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा छेड़े गये आन्दोलन में हरयाणा जनसंघर्ष समिति के अध्यक्ष के रूप में जे० पी० ने स्वामी जी को आंदोलन की बागडोर सौंपी। इस समिति में चौ० देवीलाल, स्वामी अग्निवेश, डा० मंगलसेन, मनीराम बागड़ी, चौ० शिवराम वर्मा, बलवन्तराय तायल, पं० श्रीराम शर्मा, चौ० चाँदराम, चौ० मुख्त्यारसिंह, चौ० धर्मसिंह राठी आदि हरयाणा के समस्त दिग्गज नेता सदस्य थे।

सन् १९७५ में आपातकाल के दौरान मीसा के अन्तर्गत नजरबन्द किये गये। एमरजेंसी के बाद आर्यसभा का अन्य सभी पार्टियों की तरह जनता पार्टी में विलय कर दिया गया तथा सन् १९८० के लोकसभा चुनाव में आप रोहतक से लोकदल के टिकट पर सांसद चुने गये।

सन् १९८६ में राजीव–लौंगोवाल समझौते एवं पंजाब में फैल रहे उग्रवाद के खिलाफ छोटूराम पार्क रोहतक में आपने २१ दिन की भूख हड़ताल की। अनशन समाप्ति पर तत्कालीन आर्यनेता लाला रामगोपाल शालवाले जूस पिलाने के लिए पधारे।

सन् १९९२ में शराबबन्दी आन्दोलन की शुरूआत की तथा पूर्ण शराबबन्दी लागू होने तक सफलता के साथ नेतृत्व किया। सन् १९९३ में दिल्ली से हिसार की शराबबन्दी पदयात्रा का नेतृत्व किया। इस यात्रा में लगभग पांच हजार स्त्री–पुरुष सम्मिलित हुये जो सुदूर महाराष्ट्र व गुजरात तक से आये थे। यात्रा के विराट् रूप को भांप कर हरयाणा सरकार कांप उठी थी।

सन् २००१ में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान निर्वाचित हुये। वर्तमान में आप आर्य विद्यासभा गुरुकुल कांगड़ी के प्रधान पद को सुशोभित कर रहे थे।

विविध गतिविधियां :–

१. अपने जीवन की विशेष योजना को मूर्तरूप देते हुए स्वामी जी ने सैकड़ों लोगों को संन्यास, वानप्रस्थ एवं नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षायें दीं तथा हजारों योग्य एवं शिक्षित युवकों को आर्यसमाज में दीक्षित किया।

२. ब्रह्मचर्य–व्यायाम प्रशिक्षण एवं युवानिर्माण शिविरों के माध्यम से पूरे देश में युवक क्रान्ति अभियान चलाया तथा आर्यसमाज में नया जीवन फूंका।

३. पदयात्राओं, शिविरों, व्यायाम–प्रदर्शनों, जनचेतना यात्राओं के माध्यम से आर्यसमाज का प्रचार करने की परम्परा उन्होंने ही प्रारम्भ की।

४. गुरुकुल मटिण्डू (सोनीपत) के वे लम्बे समय तक प्रधान रहे। इसी प्रकार सन् १९७८ से ८५ तक गुरुकुल सिंहपुरा–सुन्दरपुर जिला रोहतक का संचालन कर संस्था को चार चाँद लगाये जो हरयाणा की समस्त आर्यसामाजिक गतिविधियों का केन्द्र बना हुआ है। गुरुकुल सिंहपुरा सुन्दरपुर (रोहतक) में महर्षि दयानन्द साधु आश्रम एवं गोशाला के भवन का निर्माण कराया एवं गुरुकुल को उन्नति के शिखर पर पहुंचाया।

५. उत्तर प्रदेश के केवलानन्द निगमाश्रम गंज बिजनौर में छह सौ बीघा भूमि एवं विशाल आश्रम है। आश्रम के अन्तर्गत संस्कृत महाविद्यालय, बी.एड. तथा नर्सिंग कालेज, विशाल गऊशाला एवं खेल स्टेडियम आदि संस्थान संचालित हो रहे हैं। यह आश्रम स्वामी सुखानन्द जी महाराज ने सन् १९८६ में स्वामी इन्द्रवेश जी को सौंप दिया था, जिसका संचालन पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी अभी तक कर रहे थे। इसी आश्रम की एक शाखा गंगा डेरा छींटावाला (पटियाला) पंजाब में स्थित है जो आपके निर्देशन में

शेष पृष्ठ 8 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

स्वामी इन्द्रवेश जी का संक्षिप्त परिचय

सामाजिक जीवन की शुरुआत

1967 में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के नाम से युवकों का संगठन बनाकर कार्य प्रारम्भ किया। उनके साथ उसी समय स्वामी अग्निवेा (पूर्वनाम प्रो. श्यामराव), स्वामी आदित्यवेश (पूर्व नाम आचार्य रामानन्द), स्वामी शक्तिवेश (पूर्व नाम डॉ. कृष्णदत्त), आचार्य देवव्रत, ब्र. कर्मपाल, प्रो. उमेदसिंह, प्रो. बलजीत सिंह आर्य, मा. धर्मपाल आर्य, ओमप्रकाश पत्रकार, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी योगानन्द, मनुदेव आर्य, राजसिंह आर्य आदि, चन्द्रभाव आर्य अनेक युवक कार्यक्षेत्र में उतरे तथा आर्य जगत् में युवक क्रान्ति अभियान के नाम से एक नया अध्याय शुरू हो गया। 1968 में आपने युवक क्रान्ति अभियान के शंखनाद के रूप में **राजधर्म** नाम से पाक्षिक पत्र भी उसी समय प्रारम्भ कर दिया जो अभी तक निरन्तर निकल रहा है। युवकों को संगठित करने एवं जनसामान्य तक अपनी बात पहुँचाने के लिए 1967 में गुरुकुल झज्जर को छोड़ दिया तथा कुरुक्षेत्र से दिल्ली तक की पदयात्रा का ऐतिहासिक आयोजन किया। यह यात्रा सैकड़ों गांवों, कस्बों व नगरों से होती हुई पन्द्रह दिन बाद दिल्ली के ऐतिहासिक लालकिले के समक्ष जलती मशाल हाथों में लेकर आर्य राष्ट्र की स्थापना के संकल्प के साथ सम्पन्न हुई। सन् 1969 में हरयाणा की जनता द्वारा छेड़े गये चण्डीगढ़ आन्दोलन में युवावर्ग का नेतृत्व करते हुये स्वामी इन्द्रवेश व उनके साथी जेल गये। रोहतक सेन्ट्रल जेल में ही उन्होंने अपने अभिन्न साथी स्वामी अग्निवेश के साथ संन्यास लेने का संकल्प लिया।

7 अप्रैल 1970 को दयानन्द मठ रोहतक में स्वामी इन्द्रवेश जी ने स्वामी अग्निवेश एवं स्वामी सत्यपति के साथ वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् स्वामी ब्रह्ममुनि जी से संन्यास की दीक्षा ली। उसी दिन स्वामीद्वय ने आर्य राष्ट्र के निर्माण का संकल्प लेते हुए **आर्यसभा** नाम से राजनीतिक पार्टी की भी स्थापना कर ली तथा सक्रिय राजनीति में उतर गये।

सन् 1941 में लोक सभा तथा 1972 में विधानसभा के चुनावों में **आर्यसभा** के दो विधायक चुने गये तथा आर्यसभा हरयाणा की सर्वाधिक वोट प्राप्त करने वाली विपक्षी पार्टी बन गई।

सन् 1973 में किसान संघर्ष समिति का गठन करके गेहूँ के भाव को लेकर जबरदस्त आन्दोलन शुरू किया। गेहूँ का भाव बढ़वाने के लिये दिल्ली के वोट क्लब पर संसद के समक्ष आमरण अनशन किया तथा गेहूँ का भाव 76 रुपये से 105 रुपये करवाने में सफलता प्राप्त की।

सन् 1974 में आर्य समाज की सर्वाधिक सशक्त सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जिसमें दिल्ली, हरयाणा, पंजाब की आर्य समाजें, शिक्षण संस्थायें व गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, कन्या गुरुकुल देहरादून, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी आदि सम्मिलित थी, के चुनाव में प्रधान चुने गये तथा गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति बने। यह चुनाव पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट की देखरेख में सम्पन्न हुआ था।

सन् 1975 में लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा छेड़े गये आन्दोलन में हरयाणा जनसंघर्ष समिति के अध्यक्ष के रूप में जे.पी. ने स्वामी जी को आन्दोलन की बागडोर सौंपी। इस समिति में चौ. देवीलाल, स्वामी अग्निवेश, डा. मंगलसेन, मनीराम बागड़ी, चौ. शिवराम वर्मा, बलवन्तराय तायल, पं. श्रीराम शर्मा, चौ. चाँदराम, चौ. मुख्त्यारसिंह, चौ. धर्मसिंह राठी आदि हरयाणा के समस्त दिग्गज नेता सदस्य थे।

सन् 1975 में आपातकाल के दौरान मीसा के अन्तर्गत नजरबन्द किये गये। एमरजेंसी के बाद आर्यसभा का अन्य सभी पार्टियों की तरह जनता पार्टी में विलय कर दिया गया तथा सन् 1980 के लोकसभा चुनाव में आप रोहतक से लोकदल के टिकट पर सांसद चुने गये।

सन् 1986 में राजीव-लौंगोवाल समझौते एवं पंजाब में फैल रहे उग्रवाद के खिलाफ छोटूराम पार्क रोहतक में आपने 21 दिन की भूख हड़ताल की। अनशन समाप्ति पर तत्कालीन आर्यनेता लाला रामगोपाल शालवाले आपको जूस पिलाने के लिए पधारे।

सन् 1992 में शराबबन्दी आन्दोलन की शुरुआत की तथा पूर्ण शराबबन्दी लागू होने तक सफलता के साथ नेतृत्व किया। सन् 1993 में दिल्ली से हिसार की शराबबन्दी पदयात्रा का नेतृत्व किया। इस यात्रा में लगभग पांच हजार स्त्री-पुरुष सम्मिलित हुये जो सुदूर महाराष्ट्र व गुजरात तक से आये थे। यात्रा के विराट् रूप को भांप कर हरयाणा सरकार कांप उठी थी।

सन् 2001 में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान निर्वाचित हुये। वर्तमान में आप आर्य विद्यासभा गुरुकुल कांगड़ी के प्रधान पद को सुशोभित कर रहे थे।

विविध गतिविधियाँ :–

1. अपने जीवन की विशेष योजना को मूर्तरूप देते हुए स्वामी जी ने सैकड़ों लोगों को संन्यास, वानप्रस्थ एवं नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षायें दी तथा हजारों योग्य एवं शिक्षित युवकों को आर्य समाज में दीक्षित किया।

2. ब्रह्मचर्य व्यायाम प्रशिक्षण एवं युवानिर्माण शिविरों के माध्यम से पूरे देश में युवक क्रान्ति अभियान चलाया तथा आर्य समाज में नया जीवन फूँका। शिविरों के माध्यम से लाखों युवकों को आर्य समाज से जोड़ा।

3. पदयात्राओं, शिविरों, व्यायाम-प्रदर्शनों व जनचेतना यात्राओं के माध्यम से आर्य समाज का प्रचार करने की परम्परा उन्होंने ही प्रारम्भ की।

4. गुरुकुल मटिण्डू (सोनीपत) के वे बहुत लम्बे समय तक प्रधान रहे। इसी प्रकार सन् 1978 से 85 तक गुरुकुल सिंहपुरा-सुन्दरपुर जिला रोहतक का संचालन कर संस्था को चार चाँद लगाये जो हरयाणा की समस्त आर्यसामाजिक गतिविधियों का केन्द्र बना हुआ था। गुरुकुल सिंहपुरा सुन्दरपुर (रोहतक) में महर्षि दयानन्द साधु आश्रम एवं गोशाला के भवन का निर्माण कराया एवं गुरुकुल को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया। उस समय गुरुकुल के आचार्य स्वामी चन्द्रवेश जी, व्यवस्थापक श्री जगवीर सिंह तथा प्रधान चौ. रघुवीर सिंह सरपंच सिंहपुरा थे।

5. उत्तर प्रदेश के केवलानन्द निगमाश्रम गंज बिजनौर में छह सौ बीघा भूमि एवं विशाल आश्रम है। आश्रम के अन्तर्गत संस्कृत महाविद्यालय, बी.एड तथा नर्सिंग कालेज, विशाल गऊशाला एवं खेल स्टेडियम आदि संस्थान संचालित हो रहे हैं। यह आश्रम स्वामी सुखानन्द जी महाराज ने सन् 1986 में स्वामी इन्द्रवेश जी को सौंप दिया था, जिसका संचालन पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी अभी तक कर रहे थे। इसी आश्रम की एक शाखा गंगा डेरा छींटावाला (पटियाला) पंजाब में स्थित है जो आपके निर्देशन में स्वामी ब्रह्मवेश चला रहे हैं। केवलानन्द निगमाश्रम के विशाल संस्थान का संचालन आपके कर्मठ एवं सुयोग्य शिष्य स्वामी ओमवेश जी कुशलता के साथ कर रहे हैं।

6. महर्षि दयानन्द धाम अमृतसर (पंजाब), महर्षि

दयानन्द धाम मिर्जापुर (फरीदाबाद), महर्षि दयानन्द प्राकृतिक एवं योग चिकित्सा आश्रम जीन्द आदि केन्द्र स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रेरणा से अपने-अपने क्षेत्र में वेद प्रचार एवं सेवा का ठोस कार्य कर रहे हैं।

7. स्वामी जी की अध्यक्षता में गठित वेदप्रचार आयोजन समिति के तत्वावधान में वर्ष 1986 में कुम्भमेला हरिद्वार में चालीस दिन का वेदप्रचार शिविर लगाया गया जिसमें गाय के घी से चतुर्वेद पारायण यज्ञ, विभिन्न सम्मेलन, योग शिविर, ऐतिहासिक शोभायात्रा एवं शास्त्रार्थ की चुनौती देकर पौराणिक जगत् में हलचल पैदा की, 1986 के वेदप्रचार शिविर से पूर्व कुम्भ मेले में आर्य समाज का शिविर लगभग 60 साल पहले लगा था। स्वामी जी द्वारा प्रारम्भ किये गये उक्त क्रान्तिकारी कार्यक्रम को अभी तक प्रत्येक कुम्भ मेले में चलाया जा रहा है। 1986 के कुम्भ मेले पर स्वामी प्रकाशानन्द व स्वामी योगानन्द सहित दस संन्यासी बने थे।

8. हरियाणा में आर्य समाज की छावनी के रूप में विख्यात दयानन्दमठ रोहतक के प्रधान बनाये जाने के बाद आपने 1999 से मासिक सत्संग का अनोखा कार्यक्रम प्रारम्भ किया तथा जीवन के अन्तिम क्षण तक बखूबी निभाया। आखिरी सत्संग 4 जून, 2006 को हुआ जो 81वां था। उनकी प्रेरणा से श्री सन्तराम आर्य उक्त सत्संग का संयोजन सफलता के साथ कर रहे हैं।

9. वैदिकधर्म के प्रचारार्थ स्वामी जी देश एवं विदेश में निरन्तर भ्रमण करते थे। सन् 1983 में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह दिल्ली की तैयारी हेतु आप व स्वामी अग्निवेश जी हालैण्ड, जर्मनी, अमेरिका आदि देशों में आर्यजनों को प्रेरित करने पहुँचे। इसी तरह सन् 1997 में स्वामी जी, श्री विरजानन्द जी महामन्त्री **सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्** को साथ लेकर अमेरिका गये, जहां उन्होंने अनेक शहरों में वेदप्रचार के लिए व्याख्यान दिये। उसी दौरान वे हालैण्ड आदि देशों में भी गये। वर्ष 2000 में पुनः परिषद् के प्रधान श्री जगवीर सिंह को साथ लेकर पहले अमरीका व कनाडा गये तथा बाद में हालैण्ड, जर्मनी व इंग्लैण्ड भी गये। इसी वर्ष आर्य समाज नैरोबी (केनिया) में आर्य समाज के कार्यक्रम के लिए लगभग पन्द्रह दिन लगाकर आये। इस साल जुलाई 2006 में भी उनका कार्यक्रम अमेरिका जाने का बना हुआ था किन्तु 12 जून 2006 को उनका देहावसान हो गया। अमेरिका में उनकी प्रेरणा से एक आश्रम के निर्माण की तैयारी थी। अमेरिका में स्वामी जी के बहुत सारे सहयोगी हैं जिनसे सम्पर्क का माध्यम श्री चन्द्रभान आर्य एवं लक्ष्मी आर्या हैं। 1983 में अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह रामलीला मैदान, नई दिल्ली में आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता स्वामी इन्द्रवेश जी ने की। इस अवसर पर स्वामी ओमवेश व स्वामी दिव्यानन्द सहित लगभग चौदह लोगों ने वानप्रस्थ एवं संन्यास की दीक्षा ली थी। पांच अन्तरजातीय शादियाँ भी सम्पन्न कराई गई थी जिन्हें पूर्व प्रधानमन्त्री चौ. चरणसिंह जी ने प्रमाणपत्र एवं सम्मान प्रदान किया था।

सन् 1987 में रूपकंवर को जबरन सती करने के विरुद्ध दिल्ली से दिवराला की ऐतिहासिक पदयात्रा जो स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में निकाली गई थी, में भी स्वामी इन्द्रवेश जी की विशेष प्रेरणा रही।

सन् 1987 में ही दिल्ली से पुरा महादेव (मेरठ) तक आयोजित पद यात्रा का संरक्षण स्वामी इन्द्रवेश जी ने किया। यह यात्रा भी पुरी के शंकराचार्य निरन्जन देव तीर्थ को सती के सवाल पर शास्त्रार्थ की चुनौती देने के लिए आयोजित की गई थी। इस कार्य में पूरे आर्य जगत् में नई ऊर्जा पैदा हुयी थी।

बागपत में मायात्यागी काण्ड के बाद ग्यारह सौ सत्याग्रहियों के साथ सत्याग्रह करके एक महीने तक बरेली जेल में रहे तथा बाद में हरयाणा लोक संघर्ष समिति के माध्यम से हरियाणा में जोरदार **जेल भरो आन्दोलन चलाया।** विदित हो कि मायात्यागी को पुलिस ने भरे बाजार में नंगा करके घुमाया तथा अपमानित किया था जो महिलाओं पर किये जाने वाले अत्याचार का ज्वलन्त उदाहरण था।

10. स्वामी जी के स्वास्थ्य में निरन्तर गिरावट आने के बावजूद वे आर्य समाज के समस्त कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी करते थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान चुने जाने के पश्चात् स्वामी अग्निवेश जी को सभा मुख्यालय, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली में ले जाने का अभियान स्वामी जी महाराज के नेतृत्व में ही सम्पन्न हुआ।

11. उनकी प्रेरणा से जिन महानुभावों ने संन्यास अथवा नैष्ठिक की दीक्षा ली तथा अपने आपको सामाजिक कार्य में लगाया उनमें मुख्यतया पूज्य स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी शक्तिवेश जी, स्वामी वरुणवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी ओमवेश जी, स्वामी क्रान्तिवेश जी, स्वामी ब्रह्मवेश, स्वामी रुद्रवेश, स्वामी कर्मपाल, स्वामी देवव्रत, स्वामी धर्ममुनि (बहादुरगढ़), स्वामी सोमवेश (उड़ीसा), स्वामी सूर्यवेश (उत्तर प्रदेश), स्वामी आनन्दवेश (शुक्रताल), स्वामी कर्मवेश (मुजफ्फनगर), स्वामी श्रद्धानन्द (उत्तर प्रदेश), स्वामी महानन्द (शुक्रताल), स्वामी योगानन्द (मीरापुर), स्वामी महेशानन्द (बिजनौर), स्वामी धर्मवेश (अलवर), स्वामी शिवानन्द (धरारी), स्वामी प्रकाशानन्द (पिपराली), स्वामी सिंहमुनि पलवल, स्वामी सत्यवेश (जुलाना), स्वामी सत्यवेश (गाजियाबाद), स्वामी दिव्यानन्द (हरिद्वार) आदि संन्यासियों एवं श्री रामधारी शास्त्री, आचार्य जयवीर आर्य, आचार्या कलावती, जगवीर सिंह, आचार्य हरिदेव, ब्र. विनय नैष्ठिक, प्रो. विट्ठलराव (आन्ध्र प्रदेश), सुधीर कुमार शास्त्री (उड़ीसा), प्रेमपाल शास्त्री (दिल्ली), शिवराम विद्यावाचस्पति (पलवल), सन्तराम आर्य (रोहतक), ब्र. सहन्सरपाल (मु. नगर), कु. पूनम आर्या, कु. प्रवेश आर्या (रोहतक) आदि नैष्ठिकों के नाम उल्लेखनीय है।

12. स्वामी जी की प्रेरणा से ही जिन महानुभावों ने राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेना शुरू किया तथा ख्याति अर्जित की उनमें सर्वश्री स्वामी अग्निवेश पूर्व शिक्षामन्त्री, स्वामी आदित्यवेश पूर्व विधायक एवं चेयरमैन एग्रो. स्वामी ओमवेश गन्ना विकास मन्त्री उत्तर प्रदेश, प्रो. उमेदसिंह पूर्व विधायक (महम), मा. श्यामलाल पूर्व विधायक (पलवल), श्री राजेन्द्र सिंह बीसला पूर्व विधायक (बल्लभगढ़), श्री भवानी सिंह पूर्व विधायक (राजस्थान) श्री गंगाराम पूर्व विधायक (गोहाना), डॉ. महासिंह पूर्व मन्त्री (सोनीपत), श्री रोशनलाल आर्य पूर्व विधायक (यमुना नगर), चौ. वीरेन्द्र सिंह पूर्वमन्त्री (नारनौद), चौ. टेकचन्द नैन पूर्व विधायक (नरवाना), चौ. अजीतसिंह पूर्व विधायक (बेरी) श्री विरजानन्द आदि के नाम उल्लेखनीय है।

स्वामी इन्द्रवेश जी ने अपने जीवन का एक-एक क्षण समाज परिवर्तन के लिए लगाया। उनके तेजस्वी व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अनेक लोगों ने अपना जीवन समाज सेवा में समर्पित किया। उनके जीवन से प्रेरित होकर हमें एक ही संकल्प लेना चाहिए कि जिस पवित्र निष्ठा के साथ स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए अपने जीवन की आखिरी सांस तक संघर्ष किया उसी प्रकार हम सब सप्तक्रान्ति अर्थात् जातिवादमुक्त समाज, साम्प्रदायिकतामुक्त समाज, नशामुक्त समाज, पाखण्डमुक्त समाज, भ्रष्टाचारमुक्त समाज, नारी उत्पीड़नमुक्त समाज एवं शोषणमुक्त समाज की स्थापना के लिए कृतसंकल्प रहेंगे। हम आपस के सभी भेदभाव मिटाकर इस मिशन मे जुटें, यही स्वामी जी की अन्तिम इच्छा थी।

स्वामी इन्द्रवेश जी का जीवन विशद एवं खुली किताब है जिस पर विहंगम दृष्टिपात करने से संक्षेप में निम्न तथ्य उभर कर सामने आते हैं –

आर्यसमाज में एकता के प्रयास

स्वामी इन्द्रवेश जी ने सन् 1969, 1974, 1995, 1998, 2001, 2005 तथा 12 जून 2006 को जीवन के अन्तिम दिन भी आर्य समाज में एकता के प्रयास जारी रखे।

पंचायतों में स्वामी इन्द्रवेश

समय-समय पर विभिन्न पंचायतों में स्वामी जी को ससम्मान बुलाया गया जिनका विवरण निम्न प्रकार है।

1. महम चौबीसी की पंचायत – 1967, 1972, 1975
2. दहियाखाप की पंचायत – 2005
3. बिनायन खाप की पंचायत –
4. सर्वखाप पंचायत
5. सर्वखाप 360 पंचायत पालम

संघर्ष एवं आन्दोलन

स्वामी जी ने जिन आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई। वे इस प्रकार हैं–

1. हिन्दी सत्याग्रह – 1957
2. गौरक्षा आन्दोलन – 1966
3. शराबबन्दी आन्दोलन – 1968
4. चण्डीगढ़ आन्दोलन – 1969
5. किसान आन्दोलन – 1973
6. अध्यापक आन्दोलन – 1973
7. बीड़छूछकवास हरिजन आन्दोलन – 1972

8. जे.पी. आन्दोलन – 1975
9. माया त्यागी काण्ड आन्दोलन – 1984
10. आतंकवाद विरोधी आन्दोलन – 1983-84
11. आतंकवाद विरोधी आन्दोलन – 1986
12. शराबबन्दी आन्दोलन – 1992
13. शंकराचार्य के विरुद्ध सतीप्रथा विषयक आन्दोलन–1987
14. कन्या भ्रूण हत्या विरोधी आन्दोलन – 2005

संस्थाओं का संचालन

स्वामी जी ने निम्नलिखित संस्थाओं के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई–

1. गुरुकुल झज्जर
2. गुरुकुल मटिण्डू
3. गुरुकुल सिंहपुरा
4. शहीद स्मारक गुलकनी
5. केवलानन्द आश्रम गंज बिजनौर
6. महर्षि दयानन्दधाम अमृतसर
7. गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ
8. गुरुकुल कुरुक्षेत्र
9. गुरुकुल कांगड़ी
10. गुरुकुल खेड़ा खुर्द
11. गुरुकुल टटेसर

सहयोग एवं मार्ग दर्शन

जिन संस्थाओं के संचालन में तथा मार्गदर्शन में स्वामी जी की विशेष भूमिका रही वे इस प्रकार हैं–

1. गुरुकुल ततारपुर
2. गुरुकुल धीरणवास
3. कन्या गुरुकुल खरल
4. गुरुकुल कुम्भाखेड़ा
5. गुरुकुल कालवा
6. गुरुकुल सिरसागंज
7. गुरुकुल शुक्रताल
8. कन्या गुरुकुल लोवाकलां
9. गुरुकुल गौतमनगर नई दिल्ली

आर्यसमाज के आश्रम

निम्नलिखित आश्रमों के संचालन में स्वामी जी का सकारात्मक सहयोग रहा।

1. योगधाम ज्वालापुर (हरिद्वार)
2. प्रेमानन्द वैदिक आश्रम हस्तिनापुर (मेरठ)
3. शम्भूदयाल आर्य संन्यास एवं वानप्रस्थ आश्रम गाजियाबाद
4. महर्षि दयानन्द योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा आश्रम, जीन्द
5. प्रभु भक्ति आश्रम गोड़भगा, सम्भलपुर, उड़ीसा

उद्घाटन

निम्नलिखित संस्थाओं का उद्घाटन स्वामी जी के करकमलों द्वारा हुआ।

1. महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम जीन्द - 1990
2. महर्षि दयानन्द धाम अमृतसर - 1994
3. आर्य विद्यापीठ गंगाना - 2002
4. पं. नरेन्द्र भवन हैदराबाद – 2004

जनान्दोलन एवं अभियान

1. शराबबन्दी – युवक क्रान्ति अभियान – 1968
   कुरुक्षेत्र से दिल्ली-पदयात्रा – 1968
2. कुण्डली बूचड़खाना - 1969
3. किसान आन्दोलन 1973
4. जे.पी. आन्दोलन 1975
5. हिसार से सोनीपत की शराबबन्दी पद यात्रा – 1981
6. आतंकवाद के विरुद्ध मोटर साईकिल यात्रा – 1982
7. शराबबन्दी अभियान – 1992 हरियाणा, उत्तर प्रदेश
8. शराबबन्दी पदयात्रा – 1994 दिल्ली से हिसार
9. कन्या भ्रूण हत्या विरोधी यात्रा टंकारा से अमृतसर – 2005
   नरवाना से रोहतक - 2006
10. दिल्ली से पुरामहादेव सती प्रथा विरोधी यात्रा – 1987

महासम्मेलन

1. आर्य सभा महासम्मेलन जीन्द – 22 नवम्बर 1970
2. किसान सम्मेलन रोहतक – 1973
3. आर्य समाज शताब्दी सम्मेलन – 1976
   (रोहतक, मु. नगर, जयपुर)
4. महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी सम्मेलन दिल्ली – 1983
5. राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, नई दिल्ली – 1994
6. आर्य महासम्मेलन अमृतसर – 1987
7. आर्य महासम्मेलन सासरौली – 1998
8. आर्य महासम्मेलन रोहतक – 1969
9. संन्यास दीक्षा सम्मेलन – 1970
10. आर्य महासम्मेलन न्यूयार्क – 2000
11. राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन जोधपुर – 1998
12. राष्ट्रीय कार्यकर्ता सम्मेलन तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली - 2005

प्रमुख व्यक्तियों के नाम

जिनका स्वामी जी के साथ आत्मीय सम्बन्ध रहा

1. गुरुकुल झज्जर में–ब्र. हरिशरण जी, डा. महावीर मीमांसक, श्री वेदव्रत शास्त्री, श्री फतेह सिंह भण्डारी, आचार्य बलदेव, महाशय बलवन्त सिंह। वैद्य बलराम जी, वैद्य बलवन्त सिंह, वानप्रस्थ अमींलाल जी।

विद्यार्थियों में–आचार्य हरिदेव, योगेन्द्र पुरुषार्थी, डा. महावीर, डा. देवकेतु, डा. विक्रम विवेकी, श्री आनन्द कुमार ;प्ण्च्ैण्द्ध, आचार्य इन्द्रपाल, आचार्य यशपाल, सत्यव्रतनिचुम्पण, सत्यपाल उपाध्याय, स्वामी धर्मानन्द, देवव्रत आचार्य, हरिदत्त उपाध्याय।

प्रिय साथियों में–श्री आर्षव्रत शास्त्री, श्री रिसाल सिंह शास्त्री, श्री मनुदेव, स्वामी योगानन्द, स्वामी यज्ञानन्द, ब्र. रामकिशन क्रान्तिकारी (स्वामी रुन्द्रवेश), आचार्य चन्द्रदेव (स्वामी चन्द्रवेश), श्री हरिसिंह भूषण।

आर्य युवक परिषद् में–मा. धर्मपाल, प्रो. बलजीत सिंह, कप्तान सिंह आर्य, प्रो. उम्मेद सिंह, श्री ओमप्रकाश पत्रकार, प्रो. श्यामराव (स्वामी अग्निवेश), आचार्य देवव्रत, श्री मनुदेव, स्वामी योगानन्द, आचार्य रामानन्द, ब्र. कर्मपाल, श्री राजसिंह आर्य, श्री विजय चौधरी, श्री चन्द्रभान, श्री सत्यव्रत, स्वामी विवेकानन्द, श्री कृष्णदत्त, श्री सत्यपाल उपाध्याय, ब्र. आर्य नरेश, प्रो. विट्ठलराव, श्री सुभाष निम्बालकर, प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु, श्री रामनाथ सहगल, श्री रामधारी शास्त्री, श्री जगदीश सर्राफ, डा. रामप्रकाश, प्रिं बीरूराम, रघुवीर सिंह कौल।

छात्र नेताओं में–धर्मपाल सिंह, गुणपाल सिंह, यज्ञवीर दहिया, धन सिंह मोर, पृथ्वीसिंह, राजकुमार हुड्डा, जयसिंह हुड्डा, रोशनलाल आर्य, जगवीर सिंह, अजीतसिंह, मोहनलाल सारस्वत मनीषी, दयानन्द आर्य, डा. भूपसिंह, श्यामसुन्दर, दर्शन सिंह टाईगर, महिपाल सिंह दुल, ईश्वरसिंह आर्य, दयानन्द आर्य आसौदा, रामचन्द्र छत्रपति, डा. सुभाष आर्य, बलराज आर्य, जोगेन्द्र राठी, यशपाल 'यश', जयदेव अनल, अशोक आर्य, सोमदेव आर्य, बिरजानन्द, निहालचन्द, धर्मवीर, नारायण सिंह आर्य।

आर्य सभा में–पंडित देवीराम आर्य, चरण सिंह आर्य धत्तीर, श्री राजेन्द्र सिंह बीसला, के. नरेन्द्र, डा. महासिंह, चौ. ओमप्रकाश बैय्यांपुर, गंगाराम एडवोकेट, श्री चन्द कश्यप, सुखदयाल आर्य, सतवीर सिंह हुड्डा, पं. रामचन्द्र आर्य, जगतराम प्रधान, श्री राममेहर एडवोकेट, दयाकिशन आर्य, सूबेदार भगतसिंह, डा. धर्मवीर आर्य, धर्म सिंह नादान, डा. बारूसिंह, धर्मवीर कौथकलां, कलीराम नैन, टेकचन्द नैन, चौ. वीरेन्द्र सिंह नारनोन्द, सीताराम आर्य, स्वामी चन्द्रवेश, स्वामी सुधानन्द, बिशन सिंह एडवोकेट, शेरसिंह 'शेर', प्रो. भाग सिंह आर्य, चौ. रामसरूप चहल, चौ. लालसिंह, हरिराम एडवोकेट, सोमदत्त एडवोकेट, बाबूराम चौहान, वेदप्रकाश आर्य करनाल, रणजीत सिंह आर्य, चौ. चन्दासिंह, स्वामी वरुणवेश, खेमसिंह आर्य, महाश्य खेमसिंह पलवल, महाश्य भूलीराम, बलजीत सिंह आदित्य, भगत मंगतुराम, जिले सिंह आर्य, श्रीचन्द एडवोकेट चण्डीगढ़, राजवीर सिंह एडवोकेट सोनीपत, डा. विनयन शर्मा, गिरिजेश्वर।

लोकदल में–चौ. चरणसिंह, चौ. देवीलाल, चौ. चान्दराम, डा. सरूप सिंह, श्री सत्यपाल मलिक, श्री सत्यप्रकाश गौतम, श्री दौलत राम सहारण, चौ. बलवीर सिंह सैनी डण्च्, चौ. चन्द्रपाल सिंह सांसद, चौ. कंवल सिंह, पं. धर्मवीर वशिष्ठ, हीरानन्द आर्य, श्री बलवीर सिंह ग्रेवाल, चौ. उदय सिंह दलाल, श्री सतबीर सिंह मलिक, चौ. ओमप्रकाश चौटाला, श्री मनोहरलाल सैनी, चौ. बदलूराम, श्री सुरेन्द्र सिंह श्योककन्द,

चौ. कुलवीर सिंह मलिक, वैद्य किताब सिंह मलिक, श्री मनीराम बागड़ी, चौ. मनीराम गोदारा।

जनता पाटी में—श्री चन्द्रशेखर, चौ. मुख्तार सिंह, डा. मंगलसेन, बहन चन्द्रावती, चौ. रिज़कराम, श्री बलवन्त राय तायल, श्री मूलचन्द जैन।

जनान्दोलनों में—चौ. धर्म सिंह राठी, सरदार रघवीर सिंह, चौ. शिवराम वर्मा, चौ. सूरजभान, चौ. जगन्नाथ, मा. हुकम सिंह, बाबूनन्द शर्मा, मा. अयोध्या प्रसाद, राव मूलचन्द, कामरेड रघवीर सिंह हुड्डा व श्रद्धानन्द सोलंकी।

आर्य समाज में—माता जगदीश आर्या, माता भ्रावांबाई, डा. के.के. पसरीचा, श्री मुरारी लाल शर्मा, श्री अश्वनी शर्मा एडवोकेट, श्री धर्मदेव आर्य, श्री आशानन्द आर्य, वैद्य तीर्थराज, श्री श्यामलाल आर्य, डा. कुन्दनलाल, श्री कर्मचन्द माली, भक्त लाभचन्द, श्री सरदारी लाल आर्य रत्न, लाला पोहूराम मोगा, वेदरत्न आर्य ऊना, बलवीर सिंह चौहान, विश्वबन्धु आर्य, राजकुमार आर्य, गिरधारी लाल स्वतन्त्र चण्डीगढ़, प्रो. ऋषिराम आर्य अम्बाला, श्री जगन्नाथ कपूर, स्वामी वीरभद्र (स्वामी सदानन्द) श्री बीरसिंह आर्य आदि यमुनानगर श्री डा. गणेशदास आर्य करनाल, श्री गिरधारी लाल आर्य एवं डा. संसारचन्द्र कैथल, श्री कृष्णलाल गर्ग पटियाला, श्री मेलाराम आर्य रोपड़, चौ. देशराज आर्य एडवोकेट एवं श्रीमती शान्ति देवी जीन्द, कृष्णगोपाल आर्य नरवाना, चौ. दयाकिशन आर्य कापड़ो, बलवीर सिंह लाठर एडवोकेट करनाल, पं. मोती लाल आर्य मिर्जापुर, श्री सत्यदेव वानप्रस्थी थानेसर, लाला रूलियाराम आर्य थानेसर, श्रीमती राजकुमारी हिसार, चौ. हरि सिंह सैनी, हिसार, चौ. बदलूराम आर्य मुकलान, चौ. दीवान सिंह बालसमन्द, कप्तान कुर्डाराम बैजलपुर, श्री चन्दूलाल आर्य गोरखपुर, बुद्धराम आर्य फतेहाबाद, हरलाल आर्य, मनीराम आर्य, देवसीराम आर्य जगदीश सीवर, जगदीश नहरा, आर. एस. सांगवान सिरसा, चौ. अभय सिंह आर्य जीन्द, श्री सौदागर चन्द एवं श्री टिकायाराम जीन्द, श्री सत्यपाल आर्य सोनीपत, मा. रत्न सिंह आर्य बैरयांपुर, वैद्य ताराचन्द आर्य खरखोदा, महाश्य दरियावसिंह (स्वामी दयामुनि), मनसाराम आर्य कतलूपुर, रणधीर सिंह, जगदीश, मेहर सिंह एवं आर्य मुनि नांगलकला, रत्नसिंह आर्य, नफेसिंह सन्तलाल, कृष्ण सिंह, जयपाल भरतसिंह फरमाणा, महाशय अमरसिंह आर्य, खरकड़ा, उग्रसैन आर्य निंदाना, मा. रघवीर सिंह, धूपसिंह आर्य, चौ. जयसिंह ठेकेदार मदीना, रामसरूप आर्य मोखरा, मा. अतरसिंह, कप्तान शेरसिंह, मा. हरकेराम सुन्डाना, महाशय चन्दूलाल व कप्तान प्रभाती लाल बालन्द, चौ. रघवीर सिंह सरपंच सिंहपुरा, वीरेन्द्र शास्त्री, दयानन्द आर्य, महाशय गणेशीराम, जगत सिंह, भाना राम आर्य, पं. मोजीराम टिटौली, स्वामी प्रेमानन्द सांधी, टेकराम आर्य, मुख्तार सिंह, मांगेराम आर्य, महेन्द्र सिंह मकड़ौली, सुमेरसिंह सूबेसिंह रिटा. बी. डी. ओ. मकड़ौली खुर्द, श्री रामधन लाढौत, रघुनाथ सिंह किलोई, कुलवीर सिंह मौजीराम, कंवल सिंह बलियाना, रणधीर सिंह सिवाना, मौजीराम काठमण्डी, शान्ताराम आर्य, डा. राममेहर, महाशय पूर्ण सिंह आर्य, श्री भगवान सिंह राठी, मामचन्द्र आर्य, बहन लक्ष्मी देवी आर्या, मुन्शीराम कन्हेली, मा. धनश्याम दास, चौ. मांगेराम ठेकेदार, श्री जुगतीराम मलिक, डा. बलवीर सिंह, श्री धर्म सिंह सैनी, जयकरण आर्य एवं राजकर्ण आर्य बादली, पहलवान धर्मवीर, उम्मेदसिंह, समेराम, मांगेराम माजरी (गुभाना), महाश्य मनोहरलाल आर्य किलोई, श्री धर्मसिंह व दलीप सिंह कोट, प्रताप सिंह बराणी, अतरसिंह माजरा मोहम्मदपुर, तेज सिंह जहांगीरपुर, धर्मपाल कुलाना, महाशय हीरालाल छोटी बीकानेर, महाश्य परमानन्द गणियार, महाश्य रामपत कनीना, जगदीश सरपंच, लाला ईशरदास आर्य नारनौल, लक्ष्मीचन्द आर्य, महाश्य श्री चन्द आर्य, महाश्य भूलेराम, लाला लछमनदास आर्य, नत्थूसिंह पहलवान, सुभाष सेठी, भीमसेन विद्यालंकार, लाला रघुनाथ मित्तल, लाला मेघराज, धनपतराय आर्य, लेखराज आर्य, चौ. मनफूलसिंह आर्य, कामरका, मा. हेतराम आर्य, नेतराम डागर, रामसरूप आर्य टीकरी ब्राह्मण, रणधीर सिंह बन्चारी, श्री ओमप्रकाश गुप्ता व माता लीलावती गुप्ता दिल्ली, श्रीमती ईश्वरी देवी एवं पं. कृष्णचन्द विद्यालंकार, श्री यशपाल ऋषि एव श्रीमती उषा ऋषि, श्रीमती सन्तोष भल्ला, श्रीमती सुशीला, श्रीमती विद्यावती अरोड़ा एवं श्री रमेश अरोड़ा, श्री रघुनाथ सिंह, चौ. जलसिंह आर्य, श्री धर्मपाल यादव, डा. मथुरासिंह, मेजर बलवान सिंह, प्रि. भोपाल सिंह, प्रि. ओमप्रकाश राणा बड़ौत, सरदार सिंह जोणमाणा, चौ. इलमचन्द आर्य शाहपुर, राजपाल आर्य एडवोकेट एवं देवेन्द्रपाल एडवोकेट मु. नगर, मा. सुमन्त सिंह आर्य, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री जनकलाल गुप्ता, पं. रतिराम व जवाहरलाल सिलीगुड़ी, चान्दरत्न दम्मानी, अमीलाल आर्य, छबीलदास सैनी, फूलचन्द आर्य, श्री गजानन्द आर्य, श्री दयानन्द आर्य, श्री सीताराम, राजाराम आर्य, रामरिछपाल अग्रवाल, सुमित्रा अमीन, श्री चन्द्रमोहन आर्य, श्री शूरजी बल्लभदास प्रताप भाई, श्री जयदेव आर्य राजकोट, श्री मंगलसेन चोपड़ा, सूरत, श्री चन्दूलाल आर्य अहमदाबाद, श्री सूरजभान, प्रि. हरिसिंह, वैद्य सुल्तान सिंह आर्य, मा. दलीप सिंह (स्वामी धर्मवेश) बहरोड़, मदनमोहन आर्य गंगापुर सिटी, मित्र महेश आर्य अहमदाबाद, प्रदीप शास्त्री बम्बई, श्री केशवसिंह सांखला जोधपुर।

श्री सी. आर. राठी, मा. सोहनलाल, श्री अरविन्द मेहता, श्री हरबंश लाल शर्मा, श्रीमति बिमला सूद रोपड़, महात्मा रामप्रकाश धुरी, श्री के. के. पुरी मोगा, श्री केदार सिंह आर्य, श्री रणवीर सिंह आर्य, डा. धर्मदेव विद्यार्थी, मा. ज्ञान सिह आर्य श्री देशबन्धु शास्त्री, माता सुशीला आर्या भिवानी, लाला जयकिशन दास हांसी, इन्द्रसिंह आर्य पूर्व एस.डी.एम., चौ. सूबेसिंह रिटायर्ड एस.डी.एम., डा. प्रकाशवीर विद्यालंकार, चौ. जयसिंह ठेकेदार, श्री रणवीर सिंह शास्त्री, श्री मामन सिंह सैनी, मा. रामनारायण आर्य, विजयपाल आर्य, श्री हरवीर सिंह आर्य झज्जर, श्री जसवन्त सिंह देशवाल, श्री रिसाल सिंह एडवोकेट, भाई कर्ण सिंह एडवोकेट, श्री रणधीर सिह रेढू, श्री कर्णसिंह रेढू।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद एवं आर्यवीर दल में— सर्वश्री जगवीरसिंह, आचार्य जयवीर, श्री शिवराम आर्य, श्री सन्तराम आर्य, री रामनिवास आर्य नारनौल, रामपाल शास्त्री, डा. सुभाष आर्य, श्री नरेन्द्र प्रभाकर, डा. वीरेन्द्र पंवार, श्री महेन्द्र शास्त्री, स्वामी यतीश्वरानन्द, श्री रामकुमार शास्त्री, श्री ब्र. रामफल, श्री कर्मवीर आर्य, श्री डा. सीसराम आर्य, श्री सत्यवीर शास्त्री, श्री जगवीर सिंह शास्त्री, प्रि. आजादसिंह, श्री राजेन्द्र सिंह चहल, श्री ओमप्रकाश आर्य, अमृतसर, श्री वेदप्रकाश आर्य दीनानगर, श्री बृजेन्द्र भण्डारी लुधियाना, श्री सम्भाजीराव पंवार महाराष्ट्र, श्री सुधीर कुमार शास्त्री उड़ीसा, श्री बीरबल आर्य कलकत्ता, श्री सत्यदेव, श्री यशोवर्धन आचार्य, श्री योगेन्द्र नारायाण पटना, श्री मदनसिंह आर्य, श्री रामसिह आर्य, श्री दयाल सिंह आर्य, श्री चान्दमल आर्य, श्री प्रकाश सिंह, श्री नारायण सिंह, श्री कुर्बान सिंह, श्री अजीत सिंह जोधपुर, श्री हरिदेव सिंह, शिवगंज, श्री दयानन्द आर्य, सत्यनारायण आर्य हैदराबाद,

श्री मित्रमहेश आर्य अहमदाबाद, श्री दर्शन सिंह सरपंच व सत्यवीर आर्य कैथल, श्री दलबीर सिंह मलिक एडवोकेट, प्रो. वीरेन्द्र, श्री धर्मवीर, श्री बस्तीराम, सत्यपाल आर्य, आचार्य हरपाल शास्त्री।

विदेशों में स्वामी जी के प्रमुख सहयोगी

अमेरिका - डा. भूपेन्द्र गुप्त, श्री चन्द्रभान आर्य व लक्ष्मी आर्या, राजएवं अन्जू मल्होत्रा डा. विजय आर्य, श्री नरेन्द्र टण्डन, श्री टी. कुमार, श्री सुशील मड़िया, श्री बालेन्द्र कुण्डू, श्री बलदेव नारायण, श्री वेदश्रवा, श्री यशपाल आर्य, श्रीमति आशा चौहान, श्री वीरसेन मुखी, डा. सतीश प्रकाश, श्री सुभाष सहगल, श्री सुभाष अरोड़ा, डा. वीरेन्द्र सिंह, डा. राजेन्द्र गान्धी, पूर्णिमा देसाई, आदि न्यूयार्क में। श्री विपिन गुप्ता, डा. देवकेतु, डा. रमेश चन्द्र, चौ. फूलसिंह, श्री वीरेश्वरसिंह, श्री देव डबास, श्री चक्रधारी, श्री धर्मजित जिज्ञासु आदि न्यूजर्सी में। श्री राजपाल दलाल, श्री राजेन्द्र दहिया, डा. सुखदेव सोनी, डा. महिपाल पोरिया, डा. दिलीप वेदालंकार आदि शिकागो, तथा डा. शंकरलाल गर्ग, डा. राम उपाध्याय, बोस्टन आदि।

हालैण्ड- श्री गंगाराम कल्पू, डा. आनन्द कुमार बिरजा, श्री नरदेव यजुर्वेदी, श्री भगवान देन आर्य।

इसी तरह श्री अनिल कपिला व डा. राजेन्द्र सैनी, देवेन्द्र भल्ला, श्री रमेश राणा, श्री रामकृष्ण शर्मा व श्रीयशपाल अंगिरा, श्री ओ.पी. नारंग केनिया में मुख्य सहयोगी एवं शुभचिन्तक हैं।

आर्य विद्वानों में—श्री वेदप्रकाश श्रोत्रीय, डा. वेदप्रताप वैदिक, श्री शिवकुमार शास्त्री प्रो. जयदेव वेदालंकार, प्रो. अनूप सिंह, प्रो. उमाकान्त उपाध्याय, श्री रामनारायण शास्त्री पटना, वेदप्रकाश शास्त्री बिजनौर, विश्वबन्धु शास्त्री, प्रिं. कृष्ण सिंह आर्य, डा. जोगेन्द्र सिंह यादव, प्रो. रामविचार, प्रिं एन.डी. ग्रोवर, डा. सुदर्शन देव, प्रो. चन्द्र प्रकाश सत्यार्थी, प्रो. जयदेव आर्य, आचार्य भद्रसेन, डा. धर्मवीर शास्त्री, डा. सोमदेव शास्त्री, पं. गोपदेव शास्त्री, डा. के.सी. यादव, डा. सत्यकेतु विद्यालंकार, डा. तुलसीराम डा. धर्मपाल पूर्व कुलपति।

भजनोपदेशकों में—सर्वश्री पृथ्वी सिंह बेधड़क, श्री वीरेन्द्र सिंह वीर, श्री शोभाराम प्रेमी, श्री बेगराज आर्य, श्री खेमचन्द आर्य, महाश्य प्यारेलाल, महाश्य नरसिंह, पं. प्रभुदयाल आर्य, पं. ताराचन्द वैदिक तोप, महाश्य फतहसिंह, महाश्य रतन सिंह, महाश्य जोहरी सिंह, महाश्य नत्था सिंह, श्री ओमप्रकाश वर्मा, पं. चिरन्जीलाल, पं. चन्द्रभान, स्वामी रूद्रवेश, श्री लक्ष्मण सिंह बेमोल, श्री बृजपाल कर्मठ, श्री वेदभल्ला, श्री अभयराम शर्मा, श्री मामचन्द पथिक, श्री सहदेव बेधड़क, श्री राम निवास आर्य, श्री कुलदीप आर्य, श्री रामरिख आर्य, श्री सुमेरसिंह आर्य, श्री जयपाल आर्य, श्री खेमसिंह आर्य, श्री भजनलाल आर्य, श्री चूनीलाल आर्य, श्री दूलीचन्द आर्य, श्री नारायण सिंह आर्य, श्री बनवारी लाल हितैषी, श्री नरदेव आर्य, श्री तेजवीर आर्य, श्री जगदीश आर्य, श्री रामकुमार आर्य, कंवर सुखपाल।

कर्मठ कार्यकर्ताओं में—सर्वश्री ओमप्रकाश आर्य, प्रेमपाल शास्त्री, डा. नरेन्द्र वेदालंकार, डा. जयेन्द्र आचार्य, श्री शिवराज शास्त्री, आचार्य अजीत कुमार शास्त्री, श्री जगवीर सिंह शास्त्री, श्री ओम सपरा, श्री अनिल आर्य, डा. श्री वत्स, श्री देवशर्मा, आचार्य सुभाष, श्री रमेश आर्य, श्री विजय चौधरी, श्रीमती प्रवीण सिंह, श्रीमती वेदकुमारी, श्री मेघश्याम शास्त्री, श्री रामनिवास एडवोकेट, श्री सुरेश गोयल, श्री मधुरप्रकाश, श्री अभयदेव शास्त्री, श्री रमेशचन्द शास्त्री, श्री भूदेव आर्य, श्री नरेन्द्र गुप्ता, श्री बृजमोहन शंगारी, श्री वेदपाल शास्त्री, श्री विजय आर्य, मा. पूर्ण सिंह आर्य, डा. मथुरा सिंह, श्री विजय कुमार आर्य अमृतसर, श्री प्रवीण आर्य अमृतसर, श्री तरसेमलाल आर्य बरनाला, श्री बृजेन्द्र भण्डारी लुधियाना, श्री सन्तकुमार आर्य लुधियाना, श्री सुदेश कुमार आर्य लुधियाना, श्री रूपलाल आर्य लुधियाना, श्री सुरेन्द्रमोहन शर्मा, अमृतसर, श्री यशवन्त राय साथी, श्री अजयसूद मोगा, श्री बलदेव कृष्ण आर्य रामांमण्डी, श्री श्यामलाल आर्य कैथल, श्री इन्द्रपाल आर्य अमृतसर, डा. नवीन आर्य एवं डा. अंजू आर्या अमृतसर, सोमदेव शास्त्री, मेजर विजय आर्य, राजकुमार गुप्ता, मनोहर लाल आर्य चण्डीगढ़।

विदेश यात्रा

1. हालैण्ड, इंग्लैण्ड, अमेरिका — 1983
2. अमेरिका, हालैण्ड — 1998
3. अमेरिका, कनाडा, हालैण्ड — 2000
4. अमेरिका, इंग्लैण्ड — 2003
5. नैरोबी केनिया — 2002

पदाधिकारी के रूप में

1. सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रधान — 1967 से 1970
2. आर्य सभा के प्रधान — 1970
3. किसान संघर्ष समिति के प्रधान — 1973
4. आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान — 1974
5. जनसंघर्ष समिति के प्रधान — 1975
6. भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान — 1992
7. लोक संघर्ष समिति के प्रधान — 1982
8. भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान — 1990
9. बन्धुआ मुक्ति मोर्चा के वरिष्ठ उपप्रधान — 1995 से 2005 तक
10. महर्षि दयानन्द धाम अमृतसर के प्रधान — 1994-2006
11. केवलानन्द निगमाश्रम गंज बिजनौर के प्रधान — 1986-2006
12. गुरुकुल मटिण्डू के प्रधान — 1972-78
13. आत्मशुद्धि आश्रम के प्रधान संस्थापक — 1967
15. आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान — 2001
16. दयानन्द मठ रोहतक के प्रधान — 1998 से 2006

साहित्य लेखन

1. प्रकाशक व मुद्रक राजधर्म पत्रिका 1968 से 2006
2. सम्पादक सुधारक 1965 से 1967
3. नेताजी सुभाष चन्द्र बोस
4. आर्य राष्ट्र
5. आर्य समाज और राजनीति
6. प्राणायाम (ब्रह्मचर्य के साधन)
7. आसन-प्राणायाम
8. पुनर्जन्म मीमांसा

सानिध्य

स्वामी इन्द्रवेश जी को जिन महान आत्माओं का विशेष सान्निध्य मिला उनमें उल्लेखनीय नाम निम्न प्रकार से हैं।

धार्मिक नेता—1. पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज, 2. स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी महाराज 3. स्वामी आत्मानन्द जी 4. स्वामी समर्पणानन्द जी 5. स्वामी भीष्म जी 6. स्वामी ब्रह्ममुनि जी 7. स्वामी सच्चिदानन्द जी योगी 8. स्वामी नित्यानन्द जी 9. महात्मा आनन्द भिक्षु जी 10. स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती 11. स्वामी सुखानन्द जी, 12. स्वामी आत्मानन्द दण्डी, 13. पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु 14. डा. सत्यकेतु विद्यालंकार 15. डा. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार 16. पं. जगदेव सिंह सिद्धान्ती 17. पंडित शंकरदेव जी 18. पं. युधिष्ठिर मीमांसक 19. डा. गोवर्धन लाल दत्त 20. आचार्य रामप्रसाद 21. आचार्य सुदर्शन देव 22. पण्डित राजवीर शास्त्री 23. डा. महावीर मीमांसक 24. आचार्य बलदेव 25. आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री 26. स्वामी सत्यपति 27. स्वामी आनन्दवेश।

आर्य नेता

1. प्रो. शेर सिंह 2. चौ. माडूसिंह 3. चौ. रणवीर सिंह 4. चौ. मित्रसेन 5. चौ. प्रियव्रत 6. श्री छोटू सिंह आर्य एडवोकेट 7. श्री शेषराव बाघमारे 8. चौ. कुम्भाराम आर्य, 9. श्री वीरेन्द्र 10. श्री के. नरेन्द्र 11. श्री रमेशचन्द मलिक पंजाब केसरी 12. श्री रामनाथ सहगल 13. श्री सत्यव्रत सामवेदी 14. प्रो. कैलाशनाथ सिंह 15. श्री रामनारायण शास्त्री।

स्वामी इन्द्रवेश जी का यह बहु-आयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व उन्हें व्यक्ति के स्तर से उठाकर एक भव्य मिशन के रूप में रेखांकित करता है। ऐसा विराट् और सम्राट् व्यक्ति ही किसी संस्था को संस्थावाद से मुक्त कराकर महान् मिशन के प्रशस्त पथ पर ला खड़ा करता है। स्वामी जी ने एक सोच, एक दिशा, एक गति आर्य समाज के समकालीन कर्णधारों और संचालकों को देने का प्रयास किया। यह बात अलग है कि कुर्सी और सत्ता से चिपटे इस नेतृत्व ने उनको कितना समझा और अपनाया।

युवा हृदय सम्राट स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के कुछ अविस्मरणीय क्षण

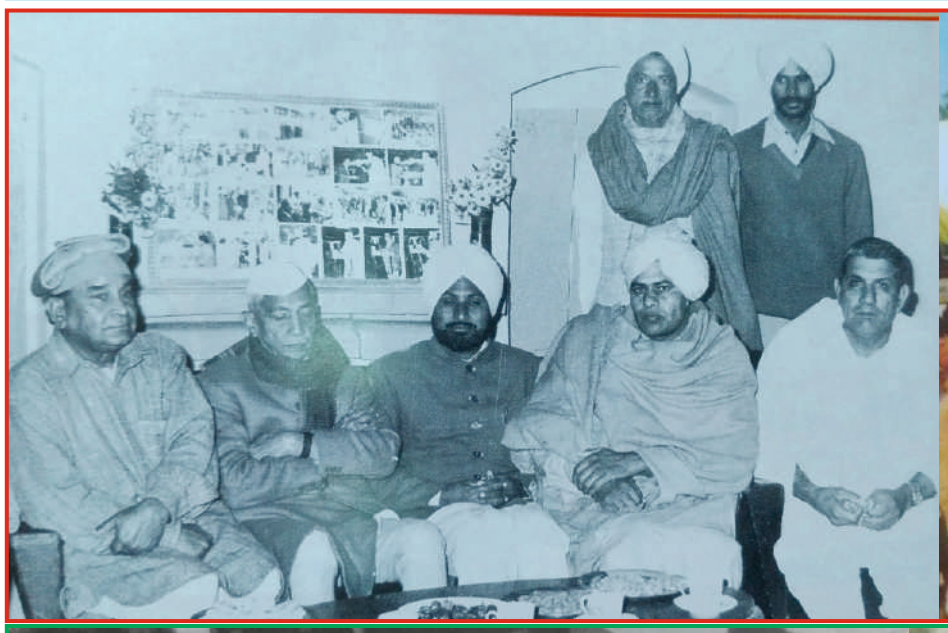

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश एवं तेलंगाना (संयुक्त आन्ध्र प्रदेश) का
साधारण अधिवेशन 2 अगस्त, 2020 को भव्यता के साथ होगा आयोजित
साधारण अधिवेशन के अवसर पर
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा नियुक्त चुनाव अधिकारी के संरक्षण में
होगा आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना सभा का निर्वाचन
लक्ष्मण सिंह–प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य–मंत्री

पृष्ठ 1 का शेष

स्वामी इन्द्रवेश जी

स्वामी ब्रह्मवेश चला रहे हैं। केवलानन्द निगमाश्रम के विशाल संस्थान का संचालन आपके कर्मठ एवं सुयोग्य शिष्य स्वामी ओम्वेश जी कुशलता के साथ कर रहे हैं।

६. महर्षि दयानन्द धाम अमृतसर (पंजाब), महर्षि दयानन्द धाम मिर्जापुर (फरीदाबाद) हरयाणा, महर्षि दयानन्द प्राकृतिक एवं योग चिकित्सा आश्रम जीन्द (हरयाणा), महर्षि दयानन्द धाम बरगड़ (उड़ीसा) आदि केन्द्र स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रेरणा से अपने–अपने क्षेत्र में वेदप्रचार एवं सेवा का ठोस कार्य कर रहे हैं।

७. स्वामी जी की अध्यक्षता में गठित वेदप्रचार आयोजन समिति के तत्वावधान में वर्ष १९८६ में कुम्भमेला हरिद्वार में चालीस दिन का वेदप्रचार शिविर लगाया गया जिसमें गाय के घी से चतुर्वेद पारायण यज्ञ, विभिन्न सम्मेलन, योग शिविर, ऐतिहासिक शोभायात्रा एवं शास्त्रार्थ की चुनौती देकर पौराणिक जगत् में हलचल पैदा की, १९८६ के वेदप्रचार शिविर से पूर्व कुम्भ मेले में आर्यसमाज का शिविर लगभग ६० साल पहले लगा था। स्वामी जी द्वारा प्रारम्भ किये गये उक्त क्रान्तिकारी कार्यक्रम को अभी भी प्रत्येक कुम्भ मेले में चलाया जा रहा है।

८. हरयाणा में आर्यसमाज की छावनी के रूप में विख्यात दयानन्दमठ रोहतक के प्रधान बनाये जाने के बाद १९९९ से मासिक सत्संग का अनोखा कार्यक्रम प्रारम्भ किया तथा जीवन के अन्तिम क्षण तक बखूबी निभाया। आखिरी सत्संग ४ जून, २००६ को हुआ जो ८१ वां था। उनकी प्रेरणा से श्री सन्तराम आर्य उक्त सत्संग का संयोजन सफलता के साथ कर रहे हैं।

९. वैदिकधर्म के प्रचारार्थ स्वामी जी देश एवं विदेश में निरन्तर भ्रमण करते थे। सन् १९८३ में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह दिल्ली की तैयारी हेतु आप व स्वामी अग्निवेश जी हालैण्ड, जर्मनी, अमेरिका आदि देशों में आर्यजनों को प्रेरित करने पहुंचे। इसी तरह सन् १९९७ में स्वामी जी श्री विरजानन्द जी महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् को साथ लेकर अमेरिका गये, जहां उन्होंने अनेक शहरों में वेदप्रचार के लिए व्याख्यान दिये। उसी दौरान वे हालैण्ड आदि देशों में भी गये। वर्ष २००० में पुनः परिषद् के प्रधान श्री जगवीरसिंह को साथ लेकर पहले अमेरिका व कनाडा गये तथ बाद में हालैण्ड, जर्मनी व इंगलैण्ड भी गये। इसी वर्ष आर्यसमाज नैरोबी (केनिया) में आर्यसमाज के कार्यक्रम के लिए लगभग पन्द्रह दिन लगाकर आये। इस साल जुलाई २००६ में भी उनका कार्यक्रम अमेरिका जाने का बना हुआ था किन्तु १२ जून २००६ को उनका देहावसान हो गया। अमेरिका में उनकी प्रेरणा से एक आश्रम के निर्माण की तैयारी थी।

१०. स्वामी जी के स्वास्थ्य में निरन्तर गिरावट आने के बावजूद वे आर्यसमाज के समस्त कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी करते थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान चुने जाने पश्चात् स्वामी अग्निवेश जी को सभा मुख्यालय, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली में ले जाने का अभियान स्वामी जी महाराज के नेतृत्व में ही सम्पन्न हुआ।

११. उनकी प्रेरणा से जिन महानुभावों ने संन्यास अथवा नैष्ठिक की दीक्षा ली तथा अपने आप को सामाजिक कार्य में लगाया उनमें मुख्यतया पूज्य स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी शक्तिवेश जी, स्वामी वरुणवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी ओम्वेश जी, स्वामी क्रान्तिवेश जी, स्वामी ब्रह्मवेश, स्वामी रुद्रवेश, स्वामी कर्मपाल, स्वामी देवव्रत, स्वामी धर्ममुनि (बहादुरगढ़), स्वामी सोमवेश (उड़ीसा), स्वामी सूर्यवेश (उत्तर प्रदेश), स्वामी आनन्दवेश (शुक्रताल), स्वामी कर्मवेश (मुजफ्फरनगर), स्वामी श्रद्धानन्द (उत्तर प्रदेश), स्वामी महानन्द (शुक्रताल), स्वामी योगानन्द (मीरापुर), स्वामी महेशानन्द (बिजनौर), स्वामी धर्मवेश (अलवर), स्वामी शिवानन्द (धरारी), स्वामी प्रकाशानन्द (पिपराली), स्वामी सिंहमुनि पलवल, स्वामी सत्यवेश (जुलाना), स्वामी सत्यवेश (गाजियाबाद), स्वामी दिव्यानन्द (हरिद्वार) आदि संन्यासियों एवं श्री रामधारी शास्त्री, आचार्य जयवीर आर्य, आचार्या कलावती, जगवीर सिंह, आचार्य हरिदेव, ब्र० विनय नैष्ठिक, प्रो० विट्ठलराव (आन्ध्र प्रदेश), सुधीर कुमार शास्त्री (उड़ीसा), प्रेमपाल शास्त्री (दिल्ली), शिवराम विद्यावाचस्पति (पलवल), सन्तराम आर्य (रोहतक), ब्र० सहन्सरपाल (मु० नगर), कु० पूनम आर्या, कु० प्रवेश आर्या (रोहतक) आदि नैष्ठिकों के नाम उल्लेखनीय हैं।

१२. स्वामी जी की प्रेरणा से ही जिन महानुभावों ने राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेना शुरू किया तथा ख्याति अर्जित की उनमें सर्वश्री स्वामी अग्निवेश पूर्व शिक्षामन्त्री, स्वामी आदित्यवेश पूर्व विधयक एवं चेयरमैन एग्रो, स्वामी ओम्वेश गन्ना विकास मन्त्री उत्तर प्रदेश, प्रो० उमेदसिंह पूर्व विधायक (महम), मा० श्यामलाल पूर्व विधायक (पलवल), श्री राजेन्द्रसिंह बीसला पूर्व विधायक (बल्लभगढ़), श्री भवानी सिंह पूर्व विधायक (राजस्थान), श्री गंगाराम पूर्व विधायक (गोहाना), डॉ० महासिंह पूर्व मन्त्री (सोनीपत), श्री रोशनलाल आर्य पूर्व विधायक (यमुनानगर), चौ० वीरेन्द्रसिंह पूर्वमन्त्री (नारनौंद), चौ० टेकचन्द नैन पूर्व विधायक (नरवाना), चौ० अजीतसिंह पूर्व विधायक (बेरी) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

वर्तमान में स्वामी जी दयानन्दमठ रोहतक के प्रधान के रूप में मठ में ही रह रहे थे। उनकी सेवा में पिछले सात साल से श्री ऋषिराज शास्त्री दिन–रात साथ रहे, उनके जाने का कष्ट उन्हें भी अत्यधिक है। स्वामी जी इन दिनों पुस्तक लेखन के कार्य में लगे हुये थे। उनकी पुस्तक पुनर्जन्म मीमांसा प्रकाशित हो चुकी है। पुस्तक लेखन में श्री ऋषिराज शास्त्री, कु० प्रवेश व कु० पूनम विशेष प्रयास कर रहे थे।

स्वामी इन्द्रवेश जी ने अपने जीवन का एक–एक क्षण समाज परिवर्तन के लिए लगाया। उनके तेजस्वी व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अनेक लोगों ने अपना जीवन समाज सेवा में समर्पित किया। उनकी पुण्यतिथ पर हमें एक ही संकल्प लेना चाहिए कि जिस पवित्र निष्ठा के साथ स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए अपने जीवन की आखिरी सांस तक संघर्ष किया उसी प्रकार हम सब सप्तक्रान्ति अर्थात् जातिवादमुक्त समाज, साम्प्रदायिकतामुक्त समाज, नशामुक्त समाज, पाखण्डमुक्त समाज, भ्रष्टाचारमुक्त समाज, नारी उत्पीड़नमुक्त समाज एवं शोषणमुक्त समाज की स्थापना के लिए कृतसंकल्प रहेंगे। हम आपस के सभी भेदभाव मिटाकर इस मिशन में जुटें, स्वामी जी की यही अन्तिम इच्छा थी।

प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।